बालक दीनदयाल अपनों की छत्रछाया में साहस पूर्ण व्यक्तित्व में गढ़ने लगे। इसी बीच एक घटना घटी।

रात्रि के 11 बजे थे। दीना अपनी मामी की गोद में बैठे थे। घर की अन्य महिलाएं भी वहीं थी। तभी अचानक 10–12 डाकुओं के गिरोह ने घर पर आक्रमण कर दिया।

इस बालक को गोदी से उतारो। घर के सभी आभूशण हमारे हवाले कर दो।

नन्हा दीना बिल्कुल नहीं घबराया–

हमने सुना था कि डाकू गरीबों की रक्षा के लिए अमीरों का धन लूटते हैं। किन्तु तुम तो मुझ गरीब को ही मार रहे हो।

इस बच्चे की वाणी की सच्चाई और साहस के आगे मैं नतमस्तक हूं। चलो वापस चलो।